पाठ - आत्मकथ्य

शब्दार्थ-व्याख्या

1. मधुप गुन – गुनाकर कह जाता ..... मेरा रस ले अपनी भरने वाले।

शब्दार्थ

- **मधुप** – भौंरा
- **घनी** – अधिक
- **अनंत** – विशाल
- **नीलिमा** – नीला आकाश
- **असंख्य** – जिसकी कोई संख्या न हो, अनगिनत
- **जीवन-इतिहास** – जीवन की कहानी
- **व्यंग्य** – मज़ाक
- **मलिन** – गंदा
- **उपहास** – मज़ाक
- **दुर्बलता** – कमज़ोरी
- **बीती** – गुजरी हुई स्थिति या बात, खबर, हाल
- **गागर रीती** – खाली घड़ा (ऐसा मन जिसमें भाव नहीं है)

प्रसंग – कवि को जब अपनी आत्मकथा लिखने का प्रस्ताव मिला, तब अतीत में घटित सभी घटनाएँ एक – एक करके उनकी आँखों के सामने आने लगती हैं। इस काव्यांश में कवि अपने मित्रों से प्रश्न भी करते हैं कि आखिर वे कवि की आत्मकथा क्यों सुनना चाहते हैं?

व्याख्या – कवि जयशंकर प्रसाद भौंरे के माध्यम से अपनी कथा का उल्लेख करते हुए कहते हैं कि हे मन रूपी भौंरे ! गुन–गुनाकर अपनी कौन – सी कहानी कह रहा है ? कहने का तात्पर्य यह है कि जिस तरह से एक भौंरा फूलों के आसपास गुंजार करते हुए मंड़राता फिरता हैं। ठीक उसी प्रकार आज कवि का मन रूपी भँवरा भी अतीत की यादों के आसपास गुन – गुना कर गुंजार करते हुए न जाने अपनी कौन सी कहानी कहना चाह रहा है। कवि आगे कहते हैं कि उनका जीवन रूपी वृक्ष जो कभी सुख व आनंद रुपी पत्तियों से हरा भरा था। अब वो सभी पत्तियों मुरझा कर एक – एक करके गिर रही हैं। क्योंकि आज कवि के जीवन की परिस्थितियां बदल चुकी है। उनके जीवन में सुख की जगह दुख और निराशा ने ले ली है। और कवि इस वक्त अपने जीवन रूपी वृक्ष में पतझड़ का सामना कर रहे हैं।

हिंदी साहित्य रूपी इस विशाल विस्तार वाले आकाश में न जाने कितने महान पुरुषों अर्थात लेखकों के जीवन का इतिहास उनकी आत्मकथा के रूप में मौजूद हैं। उन्हें पढ़कर ऐसा प्रतीत होता है कि वह स्वयं अपना मजाक उड़वाते हैं। कहने का तात्पर्य यह है कि लोग इन महान लेखकों की आत्मकथा को पढ़कर उनकी कमियों का मजाक बनाते हैं।

इस कड़वे सत्य को जानते हुए भी कि प्रत्येक व्यक्ति एक दूसरे की दुर्बलताओं और कमजोरियों का मजाक बनाने में लगा है। फिर भी मित्रों तुम मुझसे यह कहते हो कि मेरे जीवन में जो कमियाँ हैं, जो मेरे साथ घटित हुआ है, उसे मैं सबके सामने कह डालूँ। फिर कवि अपने दोस्तों से पूछते हैं कि क्या तुम मेरी कहानी को सुनकर सुख प्राप्त कर सकोगे ? मेरा जीवन रूपी घड़ा एकदम खाली है, जिसमें कोई भाव नहीं है।

कवि आगे कहते हैं कि अगर मैंने अपनी आत्मकथा में कुछ ऐसा लिख दिया जिसे पढ़कर तुम कही ऐसा न समझो कि मेरे जीवन रूपी गागर (घड़े) में जो सुख, खुशियों और आनंद रूपी रस थे। वो सभी तुमने ही खाली किये हैं। और उन सभी

egyanarchive

रसों को मेरे जीवन रूपी गागर (घड़े) से लेकर तुमने अपने जीवन रूपी गागर (घड़े) में भर लिया हों। और मेरा जीवन दुखों से भर दिया हो।

सरलार्थ – कवि जयशंकर प्रसाद पहले तो अपनी आत्मकथा लिखने को तैयार नहीं थे और तर्क दे रहे थे कि इस हिंदी साहित्य में न जाने कितने महान पुरुषों अर्थात लेखकों के जीवन का इतिहास उनकी आत्मकथा के रूप में मौजूद हैं। लोग इन महान लेखकों की आत्मकथा को पढ़कर उनकी कमियों का मजाक बनाते हैं। इस कड़वे सत्य को स्वीकार करते हुए कि प्रत्येक व्यक्ति एक दूसरे की दुर्बलताओं और कमजोरियों का मजाक बनाने में लगा है। फिर भी कवि अंततः अपनी आत्मकथा को लिखने के लिए तैयार तो हो जाते हैं किन्तु चेतावनी भी देते हैं कि वे कुछ ऐसा भी लिख सकते हैं जिसे पढ़कर कही कोई ऐसा न समझे कि उनके जीवन में जो सुख, खुशियों और आनंद रूपी रस थे, वो उन सभी ने ही खाली किये हैं और कवि का जीवन दुखों से भर दिया है। असल में यह भी कवि का एक तर्क ही है जिसको दे कर वे अपनी आत्मकथा को लिखने से बचना चाहते हैं।

2. यह विडंबना ! अरी …….. मुसक्या कर जो भाग गया।

शब्दार्थ

- **विडंबना** – दुर्भाग्य, कष्टकर स्थिति, निंदा करना
- **सरलते** – सरल मन वाले
- **प्रवंचना** – छल, धोखा, कपट, झूठ, धूर्तता
- **उज्ज्वल गाथा** – सुखभरी कहानी
- **आलिंगन** – बाँहों में भरना
- **मुसक्या** – मुसकुराकर

प्रसंग – कवि यहां पर कहते हैं कि जिस व्यक्ति का स्वभाव जितना ज्यादा सरल होता है उसको लोग उतना ही ज्यादा धोखा देते हैं। कवि अपने उन प्रपंची मित्रों की असलियत दुनिया के सामने ला कर, उनको शर्मिंदा नही करना चाहते। साथ ही साथ वे अपने निजी पलों को भी दुनिया के सामने नहीं बताना चाहते। अपनी पत्नी की मृत्यु के बाद कवि अपने जीवन को दुःखमयी समझता है।

व्याख्या – कवि कहते हैं कि यह तो बड़े दुर्भाग्य की बात है कि मेरे मित्र मुझे आत्मकथा लिखने को कह रहे हैं क्योंकि सरल मन वाले की मैं हँसी कैसे उड़ाऊँ। मैं तो अभी तक स्वयं दूसरों के स्वभाव को समझ नहीं पाया हूँ। मेरे सरल स्वभाव के कारण जीवन में मुझसे जो गलतियां हुई। कुछ लोगों ने जो मुझे धोखे दिए या मेरे साथ जो छल – प्रपंच किया हैं। उन सभी के बारे में लिखकर मैं अपना और उनका मजाक नहीं बनाना चाहता हूँ। कहने का तात्पर्य यह है कि कवि अपने प्रपंची मित्रों की असलियत दुनिया के सामने ला कर, उनको शर्मिंदा नही करना चाहते हैं। इसीलिए कवि अपनी आत्मकथा नहीं लिखना चाहते हैं।

कवि अपनी पत्नी के साथ बिताये गये मधुर पलों का जिक्र करते हुए कहते हैं कि चांदनी रातों में मैंने अपनी प्रेयसी (पत्नी) के साथ एकांत में खिलखिला कर हंसते हुए, उससे प्यार भरी मीठी बातें करते हुए, जो समय बिताया था। वही मधुर स्मृतियों ही तो अब मेरे जीवन जीने का एक मात्र सहारा है। उन निजी क्षणों का वर्णन मैं कैसे कर सकता हूँ ? उन आनंद भरे पलों की बातों को मैं दूसरों के साथ बांटना नहीं चाहता हूँ।

egyanarchive

प्रश्न-अभ्यास

प्रश्न 1. कवि आत्मकथा लिखने से क्यों बचना चाहता है?

उत्तर- कवि बादलों को क्रांति का सूत्रधार मानता है। वह उससे पौरुष दिखाने की कामना करता है। इसलिए वह उसे गरजने-बरसने के लिए बुलाता है, न कि फुहार छोड़ने, रिमझिम बरसने या केवल बरसने के लिए। कवि तपों और दुखों को दूर करने के लिए क्रांतिकारी शक्ति की अपेक्षा करता है।

प्रश्न 2. आत्मकथा सुनाने के संदर्भ में अभी समय भी नहीं' कवि ऐसा क्यों कहता है?

उत्तर- 'अभी समय भी नहीं' कवि ने ऐसा इसलिए कहा है क्योंकि कवि को लगता है कि उसने जीवन में अब तक कोई ऐसी उपलब्धि नहीं हासिल की है जो दूसरों को बताने योग्य हो तथा उसकी दुख और पीड़ा इस समय शांत है अर्थात् वह उन्हें किसी सीमा तक भूल गया है और इस समय उन्हें याद करके दुखी नहीं होना चाहता है।

प्रश्न 3. स्मृति को 'पाथेय' बनाने से कवि का क्या आशय है?

उत्तर- कविता में बादल तीन अर्थों की ओर संकेत करता है

1. जल बरसाने वाली शक्ति के रूप में
2. उत्साह और संघर्ष के भाव भरने वाले कवि के रूप में
3. पीड़ाओं का ताप हरने वाली सुखकारी शक्ति के रूप में।

प्रश्न 4. भाव स्पष्ट कीजिए-

(क) मिला कहाँ वह सुख जिसका मैं स्वप्न देखकर जाग गया।
आलिंगन में आते-आते मुसक्या कर जो भाग गया।
(ख) जिसके अरुण कपोलों की मतवाली सुंदर छाया में।
अनुरागिनी उषा लेती थी निज सुहाग मधुमाया में।

उत्तर-

(क) उक्त पंक्तियों का भाव यह है कि कवि भी अन्य लोगों की भाँति सुखमय जीवन बिताना चाहता था पर परिस्थिति वश सुखमय जीवन की यह अभिलाषा उसकी इच्छा बनकर ही गई। सुख पाने का उसे अवसर भी मिला पर वह हाथ आते-आते रह गया अर्थात् उसकी पत्नी की मृत्यु हो जाने से वह सुखी जीवन का आनंद अधिक दिनों तक न पा सका।
(ख) कवि की प्रेयसी अत्यंत सुंदर थी। उसके कपोल इतने लाल, सुंदर और मनोहर थे कि प्रातःकालीन उषा भी अपना सौंदर्य बढ़ाने के लिए लालिमा इन्हीं कपोलों से लिया करती थी। अर्थात् उसकी पत्नी के कपोल उषा से भी बढ़कर सौंदर्यमयी थे।

egyanarchive

प्रश्न 5. उज्ज्वल गाथा कैसे गाऊँ, मधुर चाँदनी रातों की'- कथन के माध्यम से कवि क्या कहना चाहता है?

उत्तर- आत्मकथ्य कविता की भाषागत विशेषताएँ निम्नलिखित हैं-

(i) संस्कृत शब्दावली की बहुलता-'आत्मकथ्य' कविता में संस्कृतनिष्ठ भाषा का प्रयोग हुआ है; **जैसे-**

- इस गंभीर अनंत-नीलिमा में असंख्य जीवन-इतिहास।
- उसकी स्मृति पाथेय बनी है थके पथिक की पंथा की।

(ii) प्रतीकात्मकता- 'आत्मकथ्य' कविता में प्रतीकात्मक भाषा का खूब प्रयोग हुआ है; **जैसे-**

- मधुप गुन-गुनाकर कह जाता कौन कहानी यह अपनी।
- तुम सुनकर सुख पाओगे, देखोगे-यह गागर रीती।
- उज्ज्वल गाथा कैसे गाऊँ, मधुर चाँदनी रातों की।
- सीवन को उधेड़ कर देखोगे क्यों मेरी कंथा की।

(iii) बिंबात्मकता-'आत्मकथ्य' कविता में बिंबों के प्रयोग से दृश्य साकार हो उठे हैं; **जैसे-**

- मधुप गुन-गुनाकर कह जाता कौन कहानी यह अपनी।।
- मुरझाकर गिर रहीं पत्तियाँ देखो कितनी आज घनी।
- अभी समय भी नहीं, थकी सोई है मेरी मौन व्यथा।

(iv) अलंकार-आत्मकथ्य कविता में अनुप्रास और मानवीकरण अलंकार की छटा दर्शनीय है

अनुप्रास –

- कह जाता कौन कहानी यह अपनी।
- तब भी कहते हो कह डालें।

मानवीकरण –

- मधुप गुन-गुनाकर कह जाता कौन कहानी यह अपनी।
- थकी सोई है मेरी मौन व्यथा।

(v) रोयता एवं संगीतात्मकता-आत्मकथ्य कविता की प्रत्येक पंक्ति के अंत में दीर्घ स्वर एवं स्वर मैत्री होने से योग्यता। एवं संगीतात्मकता का गुण है; **जैसे-**

तब भी कहते हो–कह डालें, दुर्बलता अपनी बीती। तुम सुनकर सुख पाओगे, देखोगे यह गागर रीती।

प्रश्न 6. कवि ने जो सुख का स्वप्न देखा था उसे कविता में किस रूप में अभिव्यक्त किया है?

उत्तर- कवि ने जो सुख का स्वप्न देखा था, कविता में उसकी अभिव्यक्ति इस प्रकार है-कवि की पत्नी अत्यंत सुंदर थी। उसका रूप-सौंदर्य प्रात:कालीन उषा से भी बढ़कर था। कवि को उसके रूप-सौंदर्य को सान्निध्य अल्पकाल के लिए ही मिल सका। उसकी पत्नी सुख की अल्पकालिक मुसकान बिखेरकर उसके जीवन से दूर हो गई। इससे कवि की चिरकाल तक सुख पाने की कामना अपूर्ण रह गई। कवि ने इस व्यथा को दबाना तो चाहा पर कविता में वह प्रकट हो ही गई

egyanarchive

- जिसके अरुण-कपोलों की मतवाली सुंदर छाया में।
  अनुरागिनी उषा लेती थी निज सुहाग मधुमाया में ।।
- उज्ज्वल गाथा कैसे गाऊँ, मधुर चाँदनी रातों की।

रचना और अभिव्यक्ति

प्रश्न 7. इस कविता के माध्यम से प्रसाद जी के व्यक्तित्व की जो झलक मिलती है, उसे अपने शब्दों में लिखिए।

उत्तर- इस कविता के माध्यम से प्रसाद जी के व्यक्तित्व की निम्नलिखित विशेषताओं की झलक मिलती है

- विनम्रता : प्रसाद जी छायावाद के चार स्तंभों में प्रमुख स्थान रखते हैं, फिर भी वे अत्यंत विनम्र थे। वे अपने जीवन को उपलब्धिहीन मानकर कहते थे-छोटे-से जीवन की कैसे बड़ी कथाएँ आज कहूँ।
- सरल स्वभाव : प्रसाद जी सरल स्वभाव वाले व्यक्ति थे। वे अपनी सरलता की हँसी नहीं उड़ाना चाहते थे–यह विडंबना! अरे सरलते तेरी हँसी उड़ाऊँ मैं।
- यथार्थता : प्रसाद जी यथार्थवादी थे। वे यथार्थ को स्वीकार कर कहते थे—तुम सुनकर सुख पाओगे, देखोगे-यह गागर रीती।

प्रश्न 8. आप किन व्यक्तियों की आत्मकथा पढ़ना चाहेंगे और क्यों?

उत्तर- मैं उन व्यक्तियों की आत्मकथा पढ़ना चाहूँगा, जिन्होंने अपनी मातृ भूमि और देश के लिए सुखों को ठोकर मार दिया और अपने देश के आन-बान और शान के लिए ठोकरें खाईं, संघर्ष किया और आवश्यकता पड़ने पर मौत को भी गले लगा लिया। मैं राणा प्रताप, भगत सिंह, चंद्रशेखर आजाद, सुभाष चंद्र बोस जैसों की आत्मकथा पढ़ना चाहूँगा।

प्रश्न 9. कोई भी अपनी आत्मकथा लिख सकता है। उसके लिए विशिष्ट या बड़ा होना जरूरी नहीं। हरियाणा राज्य के गुड़गाँव में घरेलू सहायिका के रूप में काम करने वाली बेबी हालदार की आत्मकथा "आलो आंधारि" बहुतों के द्वारा सराही गई। आत्मकथात्मक शैली में अपने बारे में कुछ लिखिए।

उत्तर- छात्र अपने बारे में आत्मकथात्मक शैली में स्वयं लिखें।

"आलो आंधारि" का सारांश (संक्षेप में):

"आलो आंधारि" बेबी हालदार की आत्मकथा है, जिसमें उन्होंने अपनी कठिन जीवन यात्रा और संघर्षों को साझा किया है। वह हरियाणा के गुड़गाँव में एक घरेलू सहायिका के रूप में काम करती थीं। इस किताब में वह अपनी गरीबी, शोषण, और संघर्षों के बारे में बताती हैं, और यह दिखाती हैं कि कैसे उन्होंने इन मुश्किलों का सामना किया। यह आत्मकथा समाज में निम्न वर्ग के लोगों की स्थिति को उजागर करती है और संघर्षों के बावजूद उम्मीद और मेहनत से जीत की कहानी प्रस्तुत करती है।

egyanarchive

मेरे बारे में आत्मकथात्मक शैली में (संक्षेप में):

मेरे जीवन में कई संघर्ष आए, लेकिन मैंने कभी हार नहीं मानी। मैंने बचपन से ही परिवार की मदद की और कठिनाइयों के बावजूद अपने सपनों को पूरा करने की कोशिश की। समाज में असमानता के बावजूद मैंने सीखा कि मेहनत और आत्मविश्वास से हर मुश्किल आसान हो सकती है। आज मैं गर्व महसूस करती हूं कि मैंने अपने संघर्षों से खुद को सशक्त बनाया।

egyanarchive